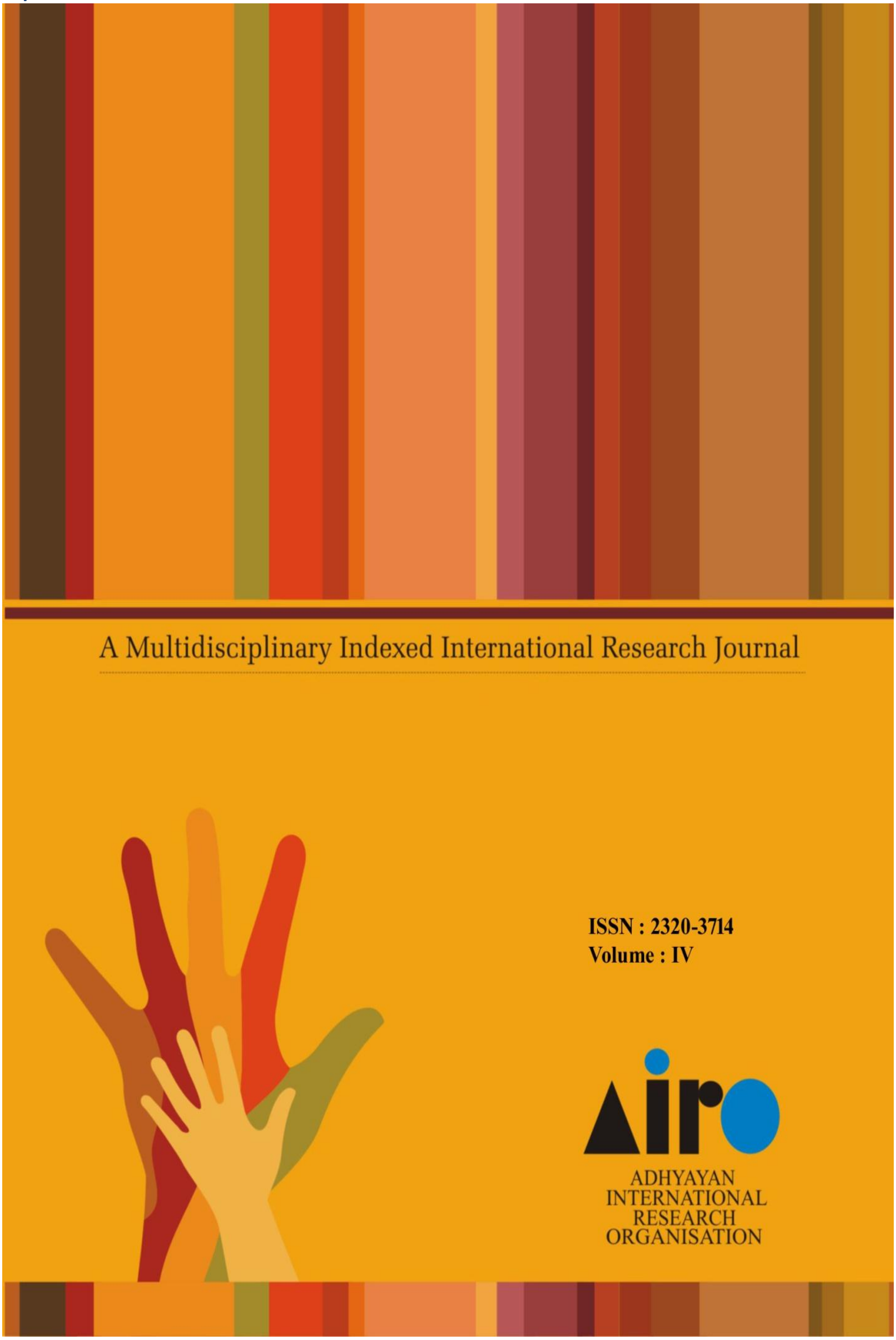
A Multidisciplinary Indexed International Research Journal
ISSN : 2320-3714
Volume : IV
ADHYAYAN
INTERNATIONAL
RESEARCH
ORGANISATION

भारत में स्त्रियों के निम्न साक्षरता के कारण व निवारण

Dr. Krishna Kumar Thakur

Asst. Professor Hindi Century Cement College Baikunth (C.G.) Dist. Raipur

Declaration of Author: I hereby declare that the content of this research paper has been truly made by me including the title of the research paper/research article, and no serial sequence of any sentence has been copied through internet or any other source except references or some unavoidable essential or technical terms. In case of finding any patent or copy right content of any source or other author in my paper/article, I shall always be responsible for further clarification or any legal issues. For sole right content of different author or different source, which was unintentionally or intentionally used in this research paper shall immediately be removed from this journal and I shall be accountable for any further legal issues, and there will be no responsibility of Journal in any matter. If anyone has some issue related to the content of this research paper's copied or plagiarism content he/she may contact on my above mentioned email ID.

प्रस्तावना

भारतीय समाज की सबसे बडी विशेषता उसकी अनेकता में एकता की भावना है. यहाँ विभिन्नप्रकार वर्गों के लोग निवास करते है, इनमे विभिन्न प्रकार की परंपराएँ प्रचलित है. वैदिक धर्म यहाँ के अधिकांश भाग का धर्म है | जो विदेशी आये वे इस समाज में मिलते चले गए. कुछ हद तक उन्होंने अपनी मौलिकता भी बनाये रखी. ऐसे बहुविधि समाज में स्त्रियों का अपना विशेष स्थान रहा है| शास्त्रों में लिखा हुआ है कि पत्नी पुरुष का आधा भाग है. वह एक श्रेष्ट मित्र भी है. यह भी कहा जाता है कि जहाँ नारी कि पूजा होती है वहीँ देवता रमण करते है. प्राचीन युग में नारी हर प्रकार से सम्मानित थी. पर आज उसकी स्थिति बिलकुल भिन्न है. उत्तर वैदिक काल में स्त्रियों कि दशा ठीक नहीं थी| बाल-विवाह प्रचलित हो गया था , वैवाहिक स्वतंत्रता समाप्त हो चुकी थी. बहु-विवाह प्रथा झोरों पर थी. वैदिक कालीन नारी जहाँ पूजनीय थी वाही उत्तर वैदिक काल में नारी नियमो के बंधन में जकड चुकी थी. बौद्धकाल सामजिक दृष्टी से और अधिक गिर गया था. वह भोग की वस्तु मानी जाती थी. बौद्द कालांतर नारी की स्थिति शोचनीय रही , मुसलमानों के शासनकाल में वह बिलकुल अबला बन गयी थी, उसके सारे अधिकार छीन लिए गए थे, उसे घर के चारदीवारी के भीतर डाल दिया गया| संत कवियों ने नारी को माया, ठगिनी, अवगुणों की खान कहकर उसकी रही सही मान्यता को ठेस पहुंचाया. रीतिकाल में आकर नारी निवारण हो गयी| इस प्रकार नारी की सामजिक दशा धीरे-धीरे गिरती गयी और वह पूज्य से भोज्य बन गयी , एक प्रकार से वह रानी से नौकरानी बन गयी , बल विवाह पर्दा प्रथा अनमोल-विवाह, बहु-विवाह उत्तराधिकार-शून्यता शिक्षा का आभाव आदि ने उसे महत्वहीन बना दिया|

आधुनिक युग प्राप्त का युग है , नारी भी जाग उठी है, वह अपने अधिकारों को प्राप्त करने के लिए जाग उठी कवियों ने उनका

पक्ष लिया पन्त जी ने कहा मुक्त करो नारी को मानव चिर बंदिनी नारी कोयुग-युग की निर्मम कार से जननि सखी प्यारी को नारी अपनी स्थिति से अवगत हो गयी है वह आज पुरुष से हर क्षेत्र में होड़ लेने लगी. कुछ हद तक यह ठीक नहीं है. अब सभी यह अनुभव करने लगे है कि नारी फिर से अपने सच्चे आदर्शो पर आ जाय और समाज में उसे वही महत्वपूर्ण प्राचीन स्थान सुलभ हो जाय. वह पुनः प्रतिष्टित पद पर आसीन हो जाय | हिंदी के यशस्वी कवी श्री जयशंकर प्रसाद जी ने नारी सम्बन्ध में क्या ही उचित कहा है -नारी तुम केवल श्रद्धा हो विश्वास रजत नग पगतल में / पीयूष स्त्रोत सी बहा करो जीवन के सुन्दर समतल में वास्तव में भारतीयों के लिए स्त्री पृथ्वी की कल्पलता है, भारतीय समाज में नारी पुरुषों के लिए तथा पुरुष नारी के लिए सर्वस्व त्याग करने के लिए तत्पर है , यही त्याग की भावना दोनों के जीवन को सुखमय बनती है. वह करुणा दया प्रेम आदि मानवीय गुणों की देवी है , वह समाज की मार्गादार्शिक भी है , वास्तव में भारतीय समाज में उसका स्थान अनुपम है| स्त्री के साथ भेद दृष्टि और लैंगिक असमानता के सैकड़ों संदर्भ समस्त धर्म साहित्य और परम्परा में बिखरे पड़े हैं। कोई भी धार्मिक मान्यता इससे अछूता नहीं है। सम्प्रदाय मानसिकता में जीने वाली परम्पराएं मानव के रूप में स्त्री को प्रतिष्ठित नहीं कर पायी हैं।

महिला साक्षरता तथा मानव अधिकार :
साहित्यकार समाज की गतिविधियों का चित्रण विविध साहित्यिक विधाओं द्वारा समाज के सामने प्रस्तुत करते हैं। कविता कहानी उपन्यास आदि में समकालीन मानव जीवन के तमाम पहलुओं की तस्वीर हम देख सकते हैं। स्त्री साक्षरता और मानव अधिकार को समकालीन साहित्य में एक प्रमुख मुद्दे के रूप में पेश किया जा रहा है। आजाद पूर्व के युग में भारतीय नारियों की दशा बहुत दयनीय और दर्दनाक थी। उन्हें परदे के पीछे रखा जाता था, शिक्षा-दीक्षा लेने का अधिकार नहीं था। वे अपने जीवन का कोई भी निर्णय अपने आप नहीं ले सकती थी। विवाह के पूर्व पिता विवाह के बाद पति और वृद्धावस्था में पुत्र उसके जीवन का निर्णय लेते थे। शादी के पूर्व और शादी के बाद ससुराल की चौहद्दियों के अन्दर अपना जीवन व्यतीत करने के लिए स्त्री अभिशप्त थी। लेकिन आजादी के बाद आधी आबादी समझी जाने वाली स्त्रियाँ हाशिए तोडकर बाहर आने की कोशिश करने लगीं। वे अपने अधिकार के बारे में सचेत होने लगीं। फलस्वरूप उनकी हालत में भी सुधार हुआ। शिक्षा भी उनके जीवन में नया मोड देने में सहायक बनी। अब स्त्री

का क्षेत्र घर के चहार दीवार नहीं हैं। सामाजिक राजनैतिक और आर्थिक दृष्टि से सृदृढता और सशक्तता की ओर बढने वाली स्त्री आज भी मानव अधिकार के लिए लड रही है। अपने को जीवन के तमाम क्षेत्रों में पुरुषों के समान बनाना और अपनी स्थिति को सुदृढ या मजबूत बनाना ही साक्षरता है। आज की स्त्री सामाजिक राजनैतिक और आर्थिक दृष्टि से सशक्त है। पर पुरुष वर्चस्ववादी समाज उसे इस तरह की स्वतंत्रता देने को तैयार नहीं हैं। पुरुष के समान स्वतंत्र होकर जीने से स्वावलम्बी होने से और स्वतंत्र होकर स्वयं निर्णय लेने का अधिकार प्राप्त करने से ही स्त्री सशक्त होती है। लेकिन आजकल ये तमाम अधिकारों के होने पर भी स्त्री स्वतंत्र नहीं हैं।

भारतीय संविधान ने भारत के हर नागरिकों को इंसान की तरह सम्मानपूर्वक जीने का शिकार प्रदान किया है। लेकिन आधी आबादी स्त्री और दलित इस अधिकार से वंचित हैं। दलित स्त्री का जीवन दोहरा अभिशाप है। छीनी गयी जिन्दगी और छूटे हुए अधिकार ने स्त्री ने नयी ललक पैदा कर दी है। समान काम के लिए समान वेतन का अधिकार ट्रेड यूनियन बनाने और उसमें शामिल होने का अधिकार शिक्षा का अधिकार सांस्कृतिक कार्यकलापों में हिस्सेदारी का अधिकार जैसे मानव अधिकार हर नागरिक के समान नारी को भी मिलें हैं। लेकिन फिर भी इन सारे अधिकारों के होते हुए भी स्त्री इनसे वंचित नजर आ रही है। समकालीन स्त्री को अपने अधिकारों के बारे में सचेत बनाकर सशक्त कराने का श्रेय आज साहित्य ले रहा है।

महिला साक्षरता और सामाजिक विद्[्]यायन:किसी भी समाज की कल्पना बिना नारी के नहीं की जा सकती समाज का स्वरूप वहाँ की नारी की स्थिति पर निर्भर करता है न केवल हमारा देश अपितु सम्पूर्ण विश्व इस सत्य को नहीं नकार सकता और यदि कोई समाज या देश इस सत्य के साथ कोई भी छेड़छाड़ करता है तो उसका दुष्परिणाम उसे तुरन्त मिलने लगता है। नेपोलियन बोनापार्ट ने नारी की महत्ता को बताते हुए कहा था कि मुझे एक योग्य माता दो मैं तुमको एक योग्य राष्ट्र दूँगा। भारत में भी नारी के संदर्भ में युक्ति है कि- यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता अतीत से ही नारी का समाज में महत्वपूर्ण स्थान रहा है। उसे सुख-समृद्धि का प्रतीक माना जाता रहा है यह स्थिति काफी समय तक चलती रही किन्तु समयानुसार स्वार्थवश नारी को मात्र भोग-विलास की वस्तु मान लिया गया। यही कारण था कि समाज में नारी की स्थिति दयनीय हो गयी। जीवन में नारी के

महत्व को स्पष्ट करते हुए बताया है कि जब आकाश बादलों से काला पड़ जाता है जब हम अंधकार में अकेले होते हैं प्रकाश की एक किरण भी नहीं दिखाई देती और चारों ओर सिर्फ कठिनाईयाँ ही कठिनाईयाँ होती हैं तब हम अपने आपको किसी प्रेममयी नारी (माँ) के हाथों में छोड़ देते हैं और निश्चिंत हो जाते हैं।

शास्त्रों में भी नारी के संबंध में मिलता है कि-

या देवी सर्वभूतेषु मातृ रूपेण संस्थिता।

नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमों नमः।।

महिलाओं से संबंधित मुद्दे वैश्विक और सार्वभौमिक है। समता विकास और शांति पर आधारित समाज के लिए यह अति आवश्यक है कि महिलाओं का सर्वांगीण विकास और उनके अधिकारों को सम्मान मिले। विश्व स्तर पर महिला साक्षरता: यद्‌यपि प्राचीन काल से आज तक विद्‌वानों का मत अपने जगह कायम रहा है कि स्त्रियों के उत्थान के बिना सामाजिक उत्थान सम्भव नहीं है। इसीलिए प्लेटो रिपब्लिक में स्त्री शिक्षा की अनिवार्यता को स्वीकार करते हैं। अरस्तू मिल माक्र्स ग्रीन और गाँधी तक ने जब मानव जाति के उत्थान पर विचार किया है स्त्रियों की दशा एवं दिशा पर विचार किया है। इतिहास गवाह है कि वे समाज एवं सभ्यतायें विनाश के गर्त में समा गई जिनमें स्त्री को वस्तु के रूप में निरूपित किया गया। आज भी युद्ध भूख महामारी अशिक्षा एवं अस्वास्थ्यकर स्थित से जूझते विश्व के समक्ष स्त्रियों की दशा सुधारने का प्रश्न ज्वलंत है। स्त्रियों के अधिकारों एवं सम्मानजनक स्थिति के निर्माण के लिए समस्त जनसेवी विश्व संस्थायें सक्रिय हैं। विश्व संगठन का प्रयास इसी प्रयास की एक कड़ी है।

आज हर शिक्षित नारी का यह कर्तव्य है कि वह मात्र परिवार को ही अपनी गतिविधियों का दायरा न बनाये बल्कि समाज के प्रति भी अपने कर्तव्य के बारे में सोंचे और इससे भी पहले अपने आपके प्रति भी अपने कर्तव्य के बारे में सोंचे जब तक हम स्वयं को न जानेंगे दूसरे हमें नहीं जान सकते। महादेवी ने कहा था "भारतीय नारी भी जिस दिन अपने सम्पूर्ण प्राण प्रवेग से जाग सकेगी उस दिन से उसकी गति रोकना किसी के लिए संभव नहीं। वह जागरण आरम्भ हो चुका है इस जागरण की गति तीव्रतर करने का दायित्व भारतीय नारी का है। राजनीति कानून प्रशासन पुलिस व्यापार तथा कला सभी क्षेत्रों में अधिक से अधिक नारियों की भागीदारी ही हमारे समाज को अधिक स्वस्थ और संतुलित बनायेगी।

नई सदी में नारी :पश्चिमी जगत के पुरुष विरोधी रूप से उभरा नारी मुक्ति संघर्ष आज व्यापक मूल्यों के पक्षधर के रूप में अग्रसर हो रहा है । यह मानव समाज के उज्जवल भविष्य का संकेत है। बीसवीं सदी का प्रथमार्ध यदि नारी जागृति का काल था तो उत्तरार्ध नारी प्रगति का । इक्कीसवी सदी का यह महत्वपूर्ण पूर्वार्ध नारी साक्षरता का काल है। आज सिर्फ पश्चिम में ही नहीं वरन विश्व के पिछड़े देशों में भी नारी घर से बाहर खुली हवा में सांस लेरही है एवं जीवन के हर क्षेत्र में पुरुषों से भी दो कदम आगे बढ़ा चुकी है। अब वह शीघ्र ही अतीत के उस गौरवशाली पद पर पहुँच कर ही दम लेगी जहां नारी के मनुष्य में देवत्व व धरती पर स्वर्ग की सृजिका तथा सांस्कृतिक चेतना की संबाहिका होने के कारण समाज 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता ' का मूल मन्त्र गुनुगुनाने को बाध्य हुआ था । नारी की आत्म विस्मृति दैन्यता व पराधीनता के कारणों में विभिन्न सामाजिक मान्यताएं व विशिष्ट परिस्थितियाँ रहीं हैं जो देश काल व समाज के अनुसार भिन्न भिन्न हैं। पश्चिम के दर्शन व संस्कृति में नारी सदैव पुरुषों से हीन शैतान की कृति पृथ्वी पर प्रथम अपराधी थी। वह पुरोहित नहीं हो सकती थी । यहाँ तक कि वह मानवी भी है या नहीं ,यह भी विवाद का विषय था। इसीलिये पश्चिम की नारी आत्म धिक्कार के रूप में एवं बदले की भावना से कभी फैशन के नाम पर निर्वस्त्र होती है तो कभी पुरुष की बराबरी के नाम पर अविवेकशील व अमर्यादित व्यवहार करती है। पश्चिम के विपरीत भारतीय संस्कृति व दर्शन में नारी का सदैव गौरवपूर्ण व पुरुष से श्रेष्ठतर स्थान रहा है। 'अर्धनारीश्वर ' की कल्पना अन्यंत्र कहाँ है। भारतीय दर्शन में सृष्टि का मूल कारण अखंड मातृसत्ता अदिति भी नारी है। वेद माता गायत्री है। प्राचीन काल में स्त्री ऋषिका भी थी , पुरोहित भी। व गृह स्वामिनी अर्धांगिनी श्री समृद्धि आदि रूपों से सुशोभित थी। कोइ भी पूजा यग्य अनुष्ठान उसके बिना पूरा नहीं होता था। ऋग्वेद की ऋषिका -शची पोलोमी कहती है अहं केतुरहं मूर्धाहमुग्रा विवाचानी । ममेदनु क्रतुपतिरू सेहनाया उपाचरेत ऋग्वेद| अर्थात -मैं ध्वजारूप (गृह स्वामिनी) तीब्र बुद्धि वाली एवं प्रत्येक विषय पर परामर्श देने में समर्थ हूँ । मेरे कार्यों का मेरे पतिदेव सदा समर्थन करते हैं । हाँ मध्ययुगीन अन्धकार के काल में बर्बर व असभ्य विदेशी आक्रान्ताओं की लम्बी पराधीनता से उत्पन्न विषम सामाजिक स्थिति के घुटन भरे माहौल के कारण भारतीय नारी की चेतना भी अज्ञानता के अन्धकार में खोगई थी। नई सदी में नारी को समाज की नियंता बनने के लिए किसी से अधिकार माँगने की

आवश्यकता नहीं है वरन उसे अर्जित करने की है। आरक्षण की वैशाखियों पर अधिक दूर तक कौन जासका है । परिश्रम से अर्जित अधिकार ही स्थायी संपत्ति हो सकते हैं। परन्तु पुरुषों की बराबरी के नाम पर स्त्रियोचित गुणों व कर्तव्यों का बलिदान नहीं किया जाना चाहिए। ममता वात्सल्य उदारता धैर्य लज्जा आदि नारी सुलभ गुणों के कारण ही नारी पुरुष से श्रेष्ठ है। जहां ‘ कामायनी ‘ का रचनाकार ” नारी तुम केवल श्रृद्धा हो ” से नतमस्तक होता है, वहीं वैदिक ऋषि घोषणा करता है कि-”स्त्री हि ब्रह्मा विभूविथ ” उचित आचरण, ज्ञान से नारी तुम निश्चय ही ब्रह्मा की पदवी पाने योग्य हो सकती हो। (ऋग्वेद)। नारी मुक्ति व साक्षरता का यह मार्ग भटकाव व मृगमरीचिका से भी मुक्त नहीं है। नारी -विवेक की सीमाएं तोड़ने पर सारा मानव समाज खतरे में पड़ सकता है। भौतिकता प्रधान युग में सौन्दर्य की परिभाषा सिर्फ शरीर तक ही सिमट जाती है। नारी मुक्ति के नाम पर उसकी जड़ों में कुठाराघात करने की भूमिका में मुक्त बाजार व्यवस्था व पुरुषों के अपने स्वार्थ हैं । परन्तु नारी की समझौते वाली भूमिका के बिना यह संभव नहीं है। अपने को ‘बोल्ड’ एवं आधुनिक सिद्ध करने की होड़ में , अधिकाधिक उत्तेजक रूप में प्रस्तुत करने की धारणा न तो शास्त्रीय ही है और न भारतीय । आज नारी गरिमा के इस घातक प्रचलन का प्रभाव तथाकथित प्रगतिशील समाज में तो है ही ग्रामीण समाज व कस्बे भी इसी हवा में हिलते नजर आ रहे हैं। नई पीढी दिग्भ्रमित व असुरक्षित है। युवतियों के आदर्श वालीवुड व हालीवुड की अभिनेत्रियाँ हैं। सीता मदालसा अपाला लक्ष्मी बाई जोन ऑफ आर्क के आदर्श व उनको जानना पिछड़ेपन की निशानी है।इस स्थिति से उबरने का एकमात्र उपाय यही है कि नारी अन्धानुकरण त्याग कर ,भोगवादी संस्कृति से अपने को मुक्त करे। अपनी लाखों करोड़ों पिछड़ी अनपढ़ बेसहारा बहनों के दुखादर्दों को बांटकर उन्हें शैक्षिक सामाजिक व आर्थिक स्वाबलंबन का मार्ग दिखाकर सभी को अपने साथ प्रगति के मार्ग पर अग्रसर होना सिखाये । तभी सही अर्थों में सशक्त होकर नारी इक्कीसवीं सदी की समाज की नियंता हो सकेगी ।

वर्तमान भारतीय परिवेश में महिलाओं का जीवन: भारतीय सभ्यता और संस्कृति में मातृ शक्ति अर्थात महिला वर्ग का स्थान सदैव सर्वोपरि माना गया है।इस देवभूमि में समस्त आराधना पद्धतियों में नारी शक्ति का पूजन किया जाता है।नारी के बगैर पुरूष के द्वारा की गई ईश आराधना अधूरी ही होती है।सृष्टि के दो अनिवार्य व पूरक अंग के रूप में महिला व पुरूष ही हैं इस शाश्वत सत्य को कौन नकार सकता है

क्या कोई स्त्री-पुरूष के सहअस्तित्व को नकार सकता है अधिकारों की बात करें तो भारतीय सभ्यता-संस्कृति व पारिवारिक मूल्य तो परिवार ही नही वरन् समाज के प्रत्येक व्यक्ति चाहे वो नर हो या नारी बालक हो या वृद्ध सभी के संरक्षण व अधिकारों की बेमिसाल धरोहर है।भारतीय समाज सदैव सहिष्णु व मानवता वादी सोच का रहा है।मुगलों तथा ब्रितानिया हुकूमत की गुलामी से मुक्ति की लडाई में महिला शक्ति किसी भी नजरिए से पुरूषों से पीछे नहीं रही हैं।वास्तविकता तो यह है कि वीर पुरूषों की जननी मातृशक्ति ही वीरोचित कर्म व धर्म की प्रेरक रही हैं।अतीत की गौरव-शाली बलिदानी त्याग मयी गाथायें समेटे भारत-भूमि में आज पारिवारिक मूल्य व आपसी विश्वास दम तोड चुका है।जिस प्रकार दीमक अच्छे भले फलदायक वृक्ष को नष्ट कर देता है उसी प्रकार पूंजीवादी व भौतिकतावादी विचारधारा भारतीय जीवन पद्धति व सोच को नष्ट करने में प्रति पल जुटा है।जिस प्रकार एक शिक्षित पुरूष स्वयं शिक्षित होता है लेकिन एक शिक्षित महिला पूरे परिवार को शिक्षित व सांस्कारिक करती है उसी प्रकार ठीक इसके उलट यह भी है कि एक दिग्भ्रमित भ्रष्ट व चरित्रहीन पुरूष अपने आचरण से स्वयं का अत्यधिक नुकसान करता है परिवार व समाज पर भी प्रतिकूल प्रभाव पडता है लेकिन अगर कोई महिला दिग्भ्रमित भ्रष्ट व चरित्रहीन हो जाये तो वह स्वयं के अहित के साथ-साथ अपने परिवार के साथ ही दूसरे के परिवार पर भी प्रतिकूल प्रभाव डालती है।एक कटु सत्य यह भी है कि एक पथभ्रष्ट पुरूष के परिवार को उस परिवार की महिला तो संभाल सकती है अपनी संतानों को हर दुःख सहन करके जीविकोपार्जन लायक बना सकती है लेकिन एक पथभ्रष्ट महिला को संभालना किसी के वश में नहीं होता है और उस महिला के परिवार व संतानों को अगर कोई महिला का सहारा व ममत्व न मिले तो उस परिवार के अवनति व अधोपतन को रोकना नामुमकिन है।

पूंजीवादी के प्रभाव में भारत में भी महिलाओं को एक उत्पाद के रूप में एक उपभोग की वस्तु के रूप में प्रस्तुतिकरण का नतीजा है कि आज अर्धनग्नता फिल्मी परदों से निकल कर महानगरों से गुजरती हुई शहरों-कस्बों में पांव पसार चुकी है।परिवारों में आपसी सामंजस्य की कमी विलासिता व उपभोगवादी संस्कृति के प्रति आर्कषण तथा अन्धानुकरण ने युवा वर्ग को गर्त में धकेलने का काम किया है।फिल्म टेलीविजन पत्र-पत्रिकायें यहां तक कि विद्यार्थियों की पाठ्य व लेखन पुस्तिका के आवरण पृष्ठ भी अश्लील अर्धनग्न का मुक नायक-नायिकाओं खिलाडियो कार्टून चरित्रों से परिपूर्ण हैं।जिनका शिक्षा जगत से नैतिकता से

कोई लेना-देना नही है उनका दर्शन प्रतिक्षण करने को विद्यार्थियों को अनवरत् प्रेरित किया जा रहा है।दरअसल वर्तमान दौर में आधुनिकता व अधिकारों के नाम पर स्वच्छंदता व भौण्डेपन को अपनाया जा रहा है।आज भी भारत की बहुसंख्यक ग्राम्य आधारित जीवन जीने वाली मेहनतकश आम जनता अपने मनोरंजन के लिए तो इन तडक-भडक वाली जीवन शैली युक्त फिल्मों को देखता है परन्तु निजी तौर पर उस शैली को उस जीवन पद्धति को अपनाने का विचार भी उसके जेहन में नही आता है।भारत में पारिवारिक विखण्डन व नैतिक अवमूल्यन के पश्चात् भी अभी सामाजिक-धार्मिक ताने बाने के कारण लोक-लाज के कारण छोटे शहरों कस्बों व ग्रामीण अंचलों में महिलायें कामकाज पर नौकरी पर निकल तो रही हैं परन्तु महानगरों सी स्वछंदता यहां देखने को नही मिलती है।

उपसंहार

भारतीय समाज में आधुनिक स्त्रियों के अस्तित्व और उसकी अस्मिता के प्रश्न को लेकर आज की युवा पीढ़ी काफी जागरूक हुई है। समाज में स्त्री शोषण के विरुद्ध देश के आम जन की आवाज स्त्री की आवाज के साथ जुड़ चुकी है। वर्तमान समय में बदलते यथार्थ ने स्त्री के अंत:करण को भी बदल डाला है। भ्रष्टाचार के विरुद्ध हुए आन्दोलन ने जहाँ आम आदमी के सोए हुए विवेक को जगाकर उसे किसी भी अन्याय के विरुद्ध एकजुट होना सिखाता तो निर्भया आन्दोलन ने इसे और हवा दी।... सारे टीवी चैनल सारे छात्र देश के सारे युवा स्त्री के पक्ष में खड़े हो गए। स्त्री-शोषण के विरुद्ध उठी जनसमूह की आवाज समाज में नारी की स्थिति में सुधार और उसकी उन्नति का सूचक है। आज नारी समाज में अपने सभी अधिकारों के साथ अपना जीवन यापन करने के साथ समाज का एक बहुत ही अहम् भाग बन चुकी है।

संदर्भग्रंथसूची

1- हंस जनवरी, **2002,** पृष्ठ सं.-**83**

2- रमणिका गुप्ता-स्त्री–विमर्श: कलम और कुदाल के बहाने पृष्ठ-सं.**55**

3- जगदीश्वर चतुर्वेदी-स्त्रीवादी साहित्य विमर्श, पृष्ठ-**204,**

4 उमा शुक्ल-भारतीय नारी अस्मिता की पहचान, पृष्ठ- **14**

5- वर्मा- शृंखला की कड़ियाँ- पृष्ठ-**92**

6- उमा शुक्ल-भारतीय नारी अस्मिता की पहचान, पृष्ठ-**15**

7- वीरभारत तलवार-राष्टीय नवजागरण औए साहित्य, पृष्ठ-**124**

8.
http://chhattisgarhvivek.blogspot.in/2011/12/blog-post_8143.html

9- डॉ.फिरोज जाफ़र अली-स्त्री-अस्मिता का संघर्ष: नये प्रश्न और नई चुनौतियाँ **2011**

10- जगदीश्वर चतुर्वेदी-स्त्रीवादी साहित्य विमर्श- पृष्ठ-**7**

11- डॉ.फिरोज जाफ़र अली-स्त्री-अस्मिता का संघर्ष : नये प्रश्न और नई चुनौतियाँ- **2011**

12- हंस जनवरी-**2002,** पृष्ठ-**82-83**